निष्क्रमण संस्कार

यह संस्कार हिन्दु धर्म संस्कारों में छठे क्रम में आता है। यह शिशु के जन्म के पश्चात् **तीसरे या चौथे मास** में सम्पन्न किया जाता है। तीन चार मास की आयु में बच्चे का शरीर इतना सशक्त अवश्य हो जाता है कि घर के बाहर थोड़ी धूप और वायु को सहन कर ले। **निष्क्रमण का अर्थ है- बाहर निकालना। बच्चे को पहली बार घर से बाहर लाने का संस्कार ही निष्क्रमण है। इसमें बालक को सूर्य के दर्शन, चन्द्र के दर्शन कराये जाते है। मनुस्मृति में भी इस संस्कार को करने के लिये शिशु के जन्म का चौथा माह ही उचित बताया गया है क्योंकि तब तक शिशु परिपक्व हो जाता है तथा बाहरी दुनिया के प्रभाव को सह सकता है।** इस उम्र तक शिशु का मस्तिष्क तथा शरीर बाहर की शक्तियों को सहने लायक बन जाता है। **निष्क्रमण संस्कार जातक के स्वास्थ्य व उसकी दीर्घायु की कामना के लिये किया जाता है।** धार्मिक ग्रन्थों में इस संस्कार के वर्णन में लिखा है-

' निष्क्रमणादायुषो वृद्धिरप्युद्दिष्टा मनीषिभिः'

हमारा शरीर मुख्यतया पांच तत्वों से बना है जिनमे अग्नि, वायु, मिट्टी, जल व आकाश होता है। जन्म के कुछ माह तक शिशु इनसे सीधे संपर्क नहीं कर सकता अन्यथा उसके शरीर में इनका संतुलन बिगड़ सकता है जो उसके स्वास्थ्य के लिये हानिकारक होता है। इसलिये तब तक उसे घर में रखा जाता है।

निष्क्रमण संस्कार के द्वारा उसे सूर्य देव व चंद्र देव के प्रकाश में सीधा लाया जाता है, बाहरी वायु का संपर्क करवाया जाता है जिससे वह बाहर के वातावरण के लिये अनुकूल बनता है।

निष्क्रमण संस्कार सम्पन्न करने की विधि-

इस संस्कार के लिये **शुभ दिन** निश्चित किया जाता है, **घर के बाहर खुले आंगन में या किसी मंदिर में माता-पिता बच्चे को सूर्य देव के समक्ष ले उसे सूर्य दर्शन कराते है और दिव्य शक्तियों से बालक के शतायु होने की कामना करते है।**

शिवे ते स्तां द्यावापृथिवी असंतापे अभिश्रियौ।
शं ते सूर्य आ तपतुशं वातो ते हृदे।
शिवा अभि क्षरन्तु त्वापो दिव्यः पयस्वतीः॥

अर्थात् हे बालक! **तेरे निष्क्रमण के समय द्युलोक तथा पृथ्वीलोक कल्याणकारी सुखद एवं शोभास्पद हो। सूर्य तेरे लिये कल्याणकारी प्रकाश करे। तेरे हृदय में स्वच्छ कल्याणकारी वायु का संचरण हो। दिव्य जल वाली गंगा-यमुना नदियां तेरे लिये निर्मल स्वादिष्ट जल का वहन करे। अपने जल से तेरी काया को धोये, मन पवित्र करे।**

कुल मिलाकर शिशु के माता-पिता पंचभूतों से अपने शिशु की दीर्घायु व कल्याण की कामना करते है। इसके पश्चात् **कुल देवी-देवता व गुरू पूजन सम्पन्न किया जाता है। सूर्य दर्शन के पश्चात् मंदिर में या घर के ही मंदिर में शिशु को**

भगवान के समक्ष धरती पर सुला दिया जाता है व प्रार्थना की जाती है-

न अघेत्यादि ममास्य शिशोरायुरप्विृव्यावहार सिद्धि।
द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं गृहान्तिष्क्रमणं करिष्ये।

वैदिक ग्रन्थों में वर्णित है कि शिशु का सूर्य दर्शन करने से वह सूर्य देव का तेज, ओज स्वयं में समाहित करने में सक्षम बनता है, वह प्रखर बुद्धि का व्यक्तित्व बन पाता है, वहीं चन्द्र दर्शन से वह चन्द्र देव की शीतलता स्वयं में समाहित कर पाता है और वह विनम्र स्वभाव का बनता है।

सूर्यास्त के समय ढ़लते सूर्य को भी प्रणाम कर शिशु को आशीर्वाद देने के लिये सूर्य देव को धन्यवाद किया जाता है। इसके पश्चात् रात्रि में चंद्रोदय होने पर इसी प्रकार शिशु को सावधानी के साथ चंद्रदेव के दर्शन कराये जाते है, देवी-देवताओं का पूजन किया जाता है व घर के सभी सदस्य शिशु को चिरंजीवी होने का आशीर्वाद देते है।

इस संस्कार का मुख्य प्रयोजन होता है कि शिशु बाहर निकलकर अपना ज्ञान क्षेत्र विस्तृत कर पाये, प्रकृति की दिव्यता से संपर्क में आये, सामाजिक परिस्थितियों व गतिविधियों का उसे बोध हो पाये, इसके साथ ही ईश्वर द्वारा प्रदत्त यह पंचतत्वों से बने शरीर को प्रकृति द्वारा और बलिष्ठ बना सके।